श्रीगुरु की सिखावनियों का माहात्म्य

सिद्धयोग पथ पर अध्ययन किए जाने वाले शास्त्रों से उद्धरण

ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा रचित ज्ञानेश्वरी से एक उद्धरण

ओवी ९८०-९८२

नमक के कण जल में मिलाने पर
वे तुरन्त ही उसमें घुल जाते हैं और जल बन जाते हैं।

जब मनुष्य निद्रा से जागता है तो
उसकी निद्रा व स्वप्न दोनों ही लुप्त हो जाते हैं
और वह जाग्रत अवस्था में लौट आता है।

इसी प्रकार, जब मनुष्य सद्भाग्यवश अपने श्रीगुरु के उपदेश का श्रवण करता है
तो वह द्वैत पर विजय पा लेता है और उसका मन विश्रान्ति पाता है।

ज्ञानेश्वरी, श्रीभगवद्गीता पर तेरहवीं शताब्दी के सन्त-कवि ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा रचित टीका है। इसे मराठी भाषा के साहित्य की अत्यन्त प्रभावशाली कृति माना जाता है। इसमें ज्ञानेश्वर महाराज श्रीभगवद्गीता के प्रत्येक श्लोक की व्याख्या, अत्यन्त स्पष्ट व दैनिक जीवन के उदाहरणों तथा कल्पनाओं द्वारा करते हैं।

ज्ञानेश्वरी, अध्याय १८, ओवी ९८०-९८२
स्वामी कृपानन्द द्वारा सम्पादित, *Jnaneshwar's Gita: A Rendering of the Jnaneshwari*
[साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क : एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, १९९९] पृ. ३२४।
मुखपृष्ठ डिज़ाइन और प्रारूप रचना : हाइमे आ. कस्तन्येदा
© २०१७ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।